भारतीय राष्ट्रवाद एवं सामाजिक समन्वय में रेलवे का योगदान

विमल कुमार मौर्य

शोध छात्र
मध्यकालीन एवं आधुनिक भारत इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ अपउंसउंनतलंरप/हउंपसण्बवउ

सारांश
प्रथम बार रेल निर्माण की योजना 1831–32 में मद्रास में बनाई गई थी लेकिन इस योजना में खामी यह थी यह अपनी तीव्रता के लिए पशुबल पर निर्भर थी जिसकी असफलता पूर्व सिद्ध थी इसलिए भारत में सर्वप्रथम रेलगाड़ी 16 अप्रैल 1883 ई० में बाम्बे से ठाणे के बीच चल सकी। ब्रिटिश हुक्मरानों के अन्य योजनाओं की तरह यह योजना भी स्वार्थसिद्धि के लिए लाया गया है ऐसा भारतीय राष्ट्रवादी विचारकों का तर्क था जो कि सत्य ही प्रतीत होता है कुछ सीमा तक। रेलवे लाने के पीछे अप्रत्यक्ष ब्रिटिश उद्देश्य ऐसे अछूते इलाके जो रेलवे से पूर्व ब्रिटिश पहुँच से दूर थे। वहाँ अपनी उपस्थिति आसान करना साथ ही सैनिक नियंत्रण एवं प्रशासनिक मजबूती देश के सभी हिस्सों में कायम करना तथा भारतीय संसाधनों का दोहन करना एवं ब्रिटिश माल के बाजार के रूप में इस्तेमाल जैसे मंसूबे को उस समय के भारतीय नेताओं ने उजागर किया।[1] अनेक खामियों के बावजूद रेलवे ने भारतीय राष्ट्रवाद को मजबूत किया क्योंकि राष्ट्रवादी नेताओं का जनता का एक स्थान दूसरे स्थान तक सफर करना आसान हुआ परस्पर मिलने जुलने से पारम्परिक सामाजिक रूढ़िवादिता समाप्त हुई। आन्दोलन में तीव्रता आई भारतीय क्षेत्रों की भौगोलिक दूरियाँ कम हुई। संचार, शिक्षा साहित्य का विकास हुआ इन सभी परिवर्तनों से राष्ट्रवादी गतिविधियों का विकास हुआ। प्रस्तुत शोधपत्र में राष्ट्रवाद को तीव्र करने में रेलवे की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

सूचक शब्द – शिक्षा साहित्य में प्रगति, ग्रामीण पृथक्ता समाप्त, सामाजिक परिवर्तन, नवीन वैचारिता, ब्रिटिश आर्थिक शोषण उजागर, भारत के विभिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक दूरी कम की, संचार में तीव्रता।

उद्देश्य
औपनिवेशिक रेलवे की शुरुआत ने आधुनिक परिभाषित भारतीय राष्ट्र को संगठित कर किस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद को प्रबलित किया, का अध्ययन करना।

अध्ययन की सीमा
शोध अध्ययन का क्षेत्र ब्रिटिशकालीन रेलवे का स्वतन्त्रता से पूर्व भारतीय राष्ट्रवाद के विस्तारण में भूमिका तक सीमांकित है।

शौध विधि
प्रस्तुत शोध में विषय की गहन समझ के लिए प्रमुखतः व्दितीयक साक्ष्य का उपयोग किया गया है एवं ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक सोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा
देसाई ए. आर. 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि'' नामक पुस्तक में रेलवे के भारत में विकसित होने के परिणामस्वरुप किस प्रकार आजादी के नुमाईंदों की भौगोलिक पहुँच, आपसी सौहार्द्र, भारतीय बाजार का एकीकरण, प्रशासनिक एकता और तत्कालीन भारत में 19वीं सदी में जो रूढ़िवादी, सामाजिक आदतें थी, को समाप्त किया नतीजतन भारतीय राष्ट्रवादी गतिविधियों को मजबूती मिली, पर विवरण दिया गया है, इसके साथ–साथ रेलवे के आगमन से लोगों के बीच कैसे प्रगतिशील सामाजिक तथा वैज्ञानिक विचारों का प्रचार प्रसार हुआ, पुस्तक में प्रकाश डाला गया है।
चन्द्र विपिन–''भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास'' नामक शीर्षक पुस्तक रेलवे निर्माण के पीछे साम्राज्यवादी उद्देश्य तथा भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं के दृष्टिकोण की गहराई से अन्तर अनुशासनात्मक संवाद प्रस्तुत करती है, साथ ही लंकाशायरों के द्वारा भारतीयों के शोषण करने और संस्थानों के दोहन के कलुषित मंसूबे को पुस्तक उजागर करती है।

थरूर शशि– ''अन्धकार काल भारत में ब्रिटिश साम्राज्य'', है नामक किताब में औपनिवेशिक काण्ड का आलोचनात्मक विश्लेषण दिया गया पुस्तक में अंग्रेजो के प्रजातिवादी सिद्धान्त, भारतीय सम्पदा के दोहन तथा भारतीय उद्योगों को खत्म करने के षडयंत्र को विवेचित किया गया है।

महात्मा गांधी 4 ''हिन्द स्वराज'' नामक अपनी पुस्तक में रेलवे की आलोचना कर भारतीय राष्ट्रवाद को एक स्वदेशी और आत्म निर्भर नजरिए से मजबूत करने की कोशिश की, साथ में गांधी जी ने पुस्तक में ये भी तर्क दिया कि रेलवे ने भारतीयों को पश्चिमी उपभोक्तावाद और भौतिकवाद की तरफ धकेला. जिससे भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का क्षरण हुआ।

शिक्षा और साहित्य में प्रगति

औपनिवेगिक काल में आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा की शुरूआत 1835ई0 में हुई, लेकिन स्थानीय स्कूलों के लिए पुस्तकों का मुद्रण तो होता था पर पुस्तकों का समुचित वितरण रेलवे आगमन के पाश्चात्य ही सम्भव हो पाया। रेलवे के आगमन से देश एक हिस्से की कोई किताब अब दूसरे हिस्से में आसानी से पहुंच सकती इस प्रकार समाचार पत्रों का भी पहुंच आसान हो गया, जिससे साहित्य में प्रगति हुई, रेलवे के आ जाने से देश के किसी एक हिस्से की वैज्ञानिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों को राष्ट्रीय सम्पत्ति बनाया जा सका विद्वजन जैसे वैज्ञानिक, कलाकार, समाजशास्त्री, दार्शनिक, अर्थविद, आवागमन की सुगमता के कारण एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाकर भारतीय बुध्दि और कलात्मक प्रतिभा का सारतत्व प्रतिपादित और प्रदर्शित कर सकते थे इस प्रकार राष्ट्रीय स्तर की जनशिक्षा और साहित्य रेलवे पर उतनी आश्रित थी जितनी किन्ही अन्य साधनों पर।[2]

ग्रामीण पृथकता कि समाप्ति

ब्रिटिशों द्वारा रेलवे का भारत में निर्माण के पीछे गुप्त उद्देश्य था ऐसे इलाके जो अभी तक नियंत्रण में नहीं थे वहां अपनी पहुँच सुनिश्चित करना तथा कच्चे माल प्राप्त करना और आयातित माल को बेचना इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए ग्रामीण इलाकों को बड़े शहरों एवं बन्दरगाहों से रेलवे लाइन के माध्यम से जोड़ा गया इस औपनिवेशिक काण्ड को लार्ड डलहौजी के विवरण से (लार्ड डलहौजीः मिनट आन रेलवे) समझा जा सकता है'' रेल की स्थापना से भारत में जो सामाजिक और व्यावसायिक लाभ होगा उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। ब्रिटेन भारतीय माल (कपास) की मांग बढ़ रही है, इसे दूर के क्षेत्रों से बन्दरगाहों तक ले जाने के लिए समुचित आवागमन के साधन उपलब्ध हों तो अधिक मात्रा में अच्छी किस्म की रूई उगाई जा सकती है, हमने अवलोकन किया है कि व्यापार सम्बन्धित सुविधाओं में थोड़ी बढ़ोत्तरी होने पर भारत के दूर दराज बाजारों में भी यूरोपीय सामान की मांग बढ़ रही है, उनके भावी फैलाव और उनके मूल्य को आंकना सूक्ष्म दृष्टि वाले विद्वानों के लिए सम्भवतया आसान नहीं होगा। भले ही रेलवे के पीछे ब्रिटिश इरादा गलत था।

इससे ग्रामीण इलाकों का शहरों से परिचय हुआ और भाई–चारे की भावना का विकास हुआ इस प्रकार रेलवे ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने का काम किया, जिससे राष्ट्रवादी भावना का विकास हुआ। वही पृ.2

सामाजिक परिवर्तन

रेलवे ने भारतीय अवाम को सामाजिक रूप से एकजुट किया, रेलवे के कारण देश के लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास मुमकिन हुआ। हालांकि कुछ अरसे तक पुराने रुढ़िवादी ने दृष्टिकोण कायम रहे लेकिन उनके पतन की प्रक्रिया शुरु हो गई, रेलवे ने सभी भारतीयों को निष्पक्ष रूप से किराये के आधार पर उनके गंतव्य तक का पहुंचाया जिससे उच्च वर्ग के लोगों को छुआछूत के पुरातन सोच त्याग करना पड़ा परिणामतः सामाजिक पृथकता के पुराने भाव तिरोहित हुए इन सामाजिक बदलावों ने लोगों को संगठित किया, जिससे राष्ट्रवाद को बल मिला। वही पृ.

नवीन वैचारिकता

यातायात को सुगमता ने लोगों यात्रा के लिए प्रेरित किया और भारत के विभिन्न हिस्सों के बीच सांस्कृतिक और सामाजिक आदान– प्रदान को बढ़ावा देने का अवसर दिया, परस्पर अलग–अलग क्षेत्र के लोगों के साथ यात्रा करने से लोगों को ब्रिटिश नीतियों और देश के हालातों से अवगत होने का अवसर मिला तथा ब्रिटिश हुक्मरानों द्वारा रेल नौकरी में प्रजातिवादी सिद्धान्त एवं भेदभावपूर्ण रेल के सुविधा जैसा कि दुरान्त ने लिखा है ''रेलवे का निर्माण ब्रिटिश सेना और व्यापार के लिए किया गया था उनका सबसे अधिक राजस्व अमेरिका के समान वस्तुओं से नहीं आता, अपितु तीसरी श्रेणी के यात्रियों हिन्दुओं से आता है परन्तु इन यात्रियों को जानवरों की तरह सुविधाहीन डिब्बों में ठूंस दिया जाता है। इन उपरोक्त तथ्यों ने भारतीयों की आँखे खोल दी राष्ट्र के बारे में सोचने पर विवश कर दिया।[3]

ब्रिटिश आर्थिक शोषण उजागर

महात्मा गाँधी ने लिखा (1909) में ''हिन्दुस्तान को रेलों ने कंगाल बना दिया यह एक ऐसी हलात है कि अगर हम समय पर नहीं चेतेंगे तो बरबाद हो जायेंगे। [4]**सत्या एम राय** ने लिखा '' यातायात के सुगम साधनों से ग्रामीण लोग शहरों में जाने लगे जिससे ग्रामीण समुदाय टूटने लगा। सस्ते यूरोपीय सूती कपड़े और बर्तनों के अत्यधिक आयात से ग्रामीण उद्योग विनिष्ट हो गए खेती से उत्पन्न नगदी फसलों के दाम बढ़ने से कारीगरों ने बंशानुगत व्यवसाय छोड़ कृषि का आश्रय ले लिया।[5] बंगाली समाचार पत्र 'समाचार' ने ३० अप्रैल 1884ई. को लिखा कि ''लोहे के सड़कों का अर्थ है लोहे कि बेड़ियाँ ''इसने लिखा विदेशी वस्तुएं अब सरलता से आ जाती है फलस्वरूप स्थानीय उद्योगों का पतन हो रहा और भारतीय गरीब।'' साथ ही रेलवे की खोज निर्माण योजना देखें तो दिखाई पड़ता रेलपथों का निर्माण विदेशी पूंजी से किया जा रहा था जिस पर 5 प्रतिशत का भारी व्याज भारतीय राजस्व से चुकाना था। इन सभी शोषणकारी ब्रिटिश हुक्मरान की नीतियों को देख कर उनके नियति का अनुमान हो जाता है जिसे भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं जैसे ब्रिटिश आर्थिक शोषण पर गोपाल कृष्ण गोखले ने कहा कि रेलवे निर्माण अंग्रेज व्यवसायिक एवं धनीवर्ग के हितों के लिए किया गया है जो हमारे संसाधनों को सोखने में सहायता करती है भारतीय लोग ऐसा महसूम करते है। जी.एस. अय्यर महोदय ने 1898 में ''रेलवे व्यापार का जीवन है'' का सांख्यिकीय परीक्षण करते हुए इस नतीजे पर पहुंचे कि 1890–94 से 1896–97 की अवधि में रेलों तथा नौकाओं द्वारा एक भाग से दूसरे भाग में ढोए गए माल की कुल मात्रा बन्दरगाहों के लिए ढोए गए सामान को छोड़कर प्रतिवर्ष 130451000 से 16765640 मन के बीच थी जबकि इसी अवधि में बन्दरगाहों के लिए ढोए गए व्यापारिक गोल को मात्रा 165105000 से 18519900 मन के बीच थी।[6] दादा भाई नौरोजी ने ब्रिटिश हुक्मरान को धन सम्पदा के निर्गमन का निद्धान्त समझाया, जिसमें तथ्यों और आंकड़ों को प्रस्तुत करते हुए भारत के संसाधनों को रणनीति पूर्ण तरीके से रिक्त करना दर्शाया था बाद में उनका ड्रेन थ्योरी 'पॉवर्टी एण्ड अन ब्रिटिश फूल इन इंडिय शीर्षक से प्रकाशित हुआ इस तरह से राष्ट्रवादी नेताओं ने ब्रिटिश आर्थिक शोषण उजागर कर भारतीय जनता को राष्ट्र के प्रति संगठित होने के लिए अभिप्रेरित किया।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों कि भौगोलिक दूरी कम की

भारत एक दूसरे से और संसार से रेलों के द्वारा जुड़े स्थानीय केन्द्रों वाला एक राष्ट्र बना।'' रेलवे का निर्माण अंदरूनी बाजारों से बन्दरगाह नगरों को जोडने के लिए किया गया। इतना ही नहीं रेलवे ने फीडर सड़कों को और भारत को एकीकृत करने वाली राजनीतिक सड़कों के निर्माण को भी बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजारों का एकीकरण हुआ।[7]

संचार तीव्रता

रेल प्राणाली ने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के वितरण का आसान बना दिया। अब देश के किसी एक भाग में घटित होने वाली घटना का प्रसारण तीव्र गति से हो पा रहा था। इससे लोगों को देश दुनिया के घटनाओं की जानकारी मिलती रही और सामाजिक जागरुकता में वृद्धि हुई संचार व्यवस्था की तीव्रता ने भाबनात्मक रूप से लोगों को जोड़ा जिससे राष्ट्रीयता का भाव स्थापित हुआ।

कृषि का व्यवसायिकरण

रेलवे तनया सड़कों के निर्माता ने उपज के मूल्य में वृध्दि की। काश्तकारों ने व्यवसायिक फसलो की खेती करना प्रारम्भ कर दिया जैसे कि नील, कपास चाय और रबड़ की खेती के लिए अंग्रेजों द्वारा प्रेरित किया गया, क्योंकि उस समय यूरोप में इन फसलों की अधिक मांग थी। व्यापार और परिवहन के विकास के साथ कृषि उत्पादन का केन्द्रीकरण हुआ भारत का कृषियंत्र राष्ट्रीय और विश्व के अर्थतन्त्र का अंगभूत अंग बन गया, देसाई ए. आर० पृ0 106

निष्कर्ष

ब्रिटिश कालीन स्वतन्त्रता से पूर्व रेलवे का विश्लेषण करने से यह अभिज्ञात होता है कि भारतीयों को नियंत्रित रखने में सबसे ज्यादा सहयोग करने वाला उपकरण दोधारी परिणाम देने वाला सिद्ध हुआ जैसे– राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान रेलवे

स्टेशन जन– राष्ट्रवाद के रूप में परिवर्तित हो गए एवं राष्ट्रवादी नेताओं ने रेलने की उपयोग कर देश के विभिन्न क्षेत्रों के राष्ट्रवादी प्रमुखों तथा अवाम से संवाद स्थापित करने के लिए किया। ब्रिटिशों के उद्देश्य को उजागर कर हथियार के रूप में राष्ट्रवादियों ने इस्तेमाल किया तथा क्रान्तिकारियों के लिए ब्रिटिश विरोधी प्रदर्शन के तोड़फोड़ के लिए रेलवे प्रतीकात्मक और व्यवहारिक सहारा बन गई।

रेलवे ने सामाजिक सामानता, संचार तीव्रता. मूल्यों में समानता, कृषि में व्यावसायिक क्रान्ति भारतीय व्यापार और पूंजी के भारत के ग्रामों में पहुंचाने में योग देकर भारतीय राष्ट्रवाद को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन्दर्भ

1. चन्द्र विपिन, 'भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2019 पृ. 86–101
2. देसाई, ए. आर, 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक दृष्टभूमिः दिनिटी प्रेस लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017 क्र. 102–108
3. दुरान्त, द कैस फॉर इण्डिया पृ.क्र. 31–35
4. गाँधी, मोहानदास करमचन्द्र, ''हिन्द स्वराज' शिक्षा भारती, दिल्ली,
5. 2021 32 राय, सत्या एम' 'भारत में उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद'' हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1985 पृ०क्र 100–02
6. थरूर शशि, अन्धकार काल भारत में बिटिश साम्राज्य'' वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2020, पृ0 कृ0 267–275.
7. बंदोपाध्याय शेखर, प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद (आधुनिक भारत का इतिहास), ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, 2022, पृ0कृ0 125–127.